International Journal of Sanskrit Research 2017; 3(3): 90-91

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2017; 3(3): 90-91
© 2017 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 23-03-2017
Accepted: 24-04-2017

डॉ0 निवेदिता राय
प्राचार्य– श्रीराम लच्छन डिग्री कालेज, अमिला–मऊ, उत्तर प्रदेश, भारत

Correspondence
डॉ0 निवेदिता राय
प्राचार्य– श्रीराम लच्छन डिग्री कालेज, अमिला–मऊ, उत्तर प्रदेश, भारत

सांख्य सूत्र पर आचार्य विज्ञान भिक्षु की टीका के आधार पर प्रकृति तत्व का विवेचन

डॉ0 निवेदिता राय

सारांश
सांख्य दर्शन भारत वर्ष के प्राचीन महत्वपूर्ण दर्शनों में अन्यत्म है, श्रुति स्मृति रामायण, महाभारत आदि पुरातन कृतियों में सांख्य योग के विचारों का अनेकों उदाहरण मिलते हैं। सांख्य दर्शन का मूलभूत ग्रन्थ है, महर्षि कपिल का 'तत्वसमास'। यह ग्रन्थ अतिसंक्षिप्त तथा सारगर्भित है।

मूल शब्दः सांख्य चेतन पुरूष, अचेतन प्रकृति सत्यकार्यवाद।

प्रस्तावना
सांख्य दर्शन द्वेत मत का प्रतिपादक है। इस दर्शन में प्रकृति और पुरूष दो मूल तत्व है। इन्हीं के परस्पर सम्बन्ध पर जगत का अविर्भाव होता है। इसमें प्रकृति अचेतन है और पुरूष चेतन है। सांख्य दर्शन सत्कार्यवाद का समर्थक है, जिसके अनुसार कार्य अपनी उत्पत्ति से पूर्व कारण में विद्यमान रहता है। सत्व रजस् तमस् इन तीन गुणों की साम्यावस्था का नाम है 'प्रकृति'।

सांख्य का अर्थ
विद्वानों ने सांख्य के दो अर्थ किया है– संख्या, ज्ञान। सांख्य शब्द की निष्पत्ति संख्या शब्द में अण् प्रत्यय लगाने से होती है और सांख्य का अर्थ है– सम्यक ख्याति। सांख्य दर्शन सम्मत सम्यक ख्याति चेतन पुरूष को व्यक्त और अव्यक्त रूप अचेतन प्रकृति से विभिन्न करके जान लेना है। इसी विवेका ज्ञान को सांख्य दर्शन में सत्व पुरूष विवेक ख्याति आदि संज्ञाओं से जाना जाता है।

प्रकृति तत्व का विवेचन–
सांख्य दर्शन के अनुसार मुख्यतः दो प्रमेय पदार्थ स्वीकार किये गये हैं, एक है चेतन पुरूष और दूसरा है अचेतन प्रकृति।
सांख्य दर्शन में कारण में कार्य की सत्ता स्वीकार की गयी है। उसके मतानुसार कार्य अपनी उत्पत्ति से पूर्व कारण में विद्यमान रहता है, जिसे प्रकृति कहते हैं। इस प्रकार सांख्य दर्शन की प्रकृति उत्पत्ति विनाशहीन पुरूष को छोड़कर अन्य सभी का मूल कारण है, जो कुछ इस विद्यमान जगत में है, वह सब इसी से अभिव्यक्त होता है। इसलिए यह सिद्धान्त सत्यकार्यवाद का सिद्धान्त कहलाता है। आचार्य विज्ञान भिक्षु का कथन है कि– ''दिक और काल भी प्रकृति के रूप

नित्यौ यौ दिक्कालौ वा तावाकाशप्रकृतिभूतौ प्रकृतेः गुणविशेषावेव'' सा0प्र0भा0 2/12

प्रकृति का ही दूसरा नाम है प्रधान महत् आदि 24 तत्व महत् से अहंकार, अहंकार से पंचतंत्रमात्राएं–(शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध, पंच कर्मेन्द्रियां, वाक्, पाणि, पाद, वायु, उपस्थ तथा पॉच ज्ञानेन्द्रियां श्रोत्र, त्वक, चक्षु रसना, प्राण। पंचस्थूलभूत पृथ्वी जल तेज वायु आकाश की उत्पत्ति होती है, ये 23 तत्व प्रकृति के विकार हैं चौबीसवां तत्व प्रकृति है 25वां तत्व पुरूष है।

प्रकृति का स्वरूप
सांख्यसूत्र के सत्व, रजस्, तमस् तीनों गुणों की साम्यावस्था को प्रकृति कहा जाता है। प्रकृति के स्वरूप के सन्दर्भ आचार्य विज्ञान भिक्षु का कथन है कि– सत्व रजस्, तमस् इन तीन मूल तत्वों की साम्यावस्था को प्रकृति कहते हैं, अर्थात ये सत्व आदि तत्व कार्य रूप में परिणत नहीं होते, वार्तिक मूलकारण में ही स्थिति रहते हैं वह कार्य माम की उपादान कारण है।

श्रीमद्भागवत गीता में भी बताया गया है कि सत्व रजस् तमस् तीनों गुण प्रकृति से ही उत्पन्न होते हैं। सांख्य कारिका में प्रकृति को मूल प्रकृति अविकृति और त्रिगुण माना है।

मूलप्रकृतिः विकृतिः सा0का0

प्रकृति पद का अर्थ

प्रकृति पद का अर्थ होगा, जिस साधन से इस समस्त जगत् की सृष्टि होती है। अचेतन तत्व समस्त जगत् का मूल उपादान है और यही जगत् की प्रलयावस्था की ओर संकेत करता है।

''प्रकर्षेण क्रीयते सर्व जगदनया इति प्रकृतिः''

सांख्य सूत्र में महर्षि कपिल ने बताया है कि मूल ''प्रकृति'' का कोई मूल उपादान नहीं है। उपादान कारण न होने से वह स्वयं मूल कही गई है और जिसका कोई मूल नहीं है, वह स्वयं में मूल है।

इसके सन्दर्भ में आचार्य विज्ञान भिक्षु ने अपने सा0प्र0मा0 में स्पष्ट कहा है कि तेइस तत्वों का मूल अर्थात उपादान कारण प्रकृति है– ''मूल शून्य है, उसका कोई उपादान कारण नहीं है।

''मूले मूलाभावादमूलंमूलं। सा0सू0 1/67

प्रकृति का पर्याय

आ0वि0भि0 ने प्रकृति के अनेक पर्याय– प्रकृति, शक्ति, अजा, अजन्मा, प्रधान, अव्यक्त, माया, अविद्या आदि दिये हैं। सांख्य दर्शन में प्रकृति को गुणवत्ती कहा गया है और गुणवत्ती होते हुए वह अगुण के लिए सक्रिय रहती है। वह पुरूष की सहायिका कही गयी है। वह निःस्वार्थ भाव से पुरूष के लिए स्वयं को प्रस्तुत करती है। प्रकृति सप्तरंगी है और पुरूष को आकृष्ट करना चाहती है।

निष्कर्ष

इस प्रकार सांख्य दर्शन में प्रकृति को सृष्टि का मूल कारण माना गया है। इसी एक तत्व से सांख्य दार्शनिक समस्त सृष्टि का उद्भव और विकास स्वीकार करते हैं। आ0वि0भि0 ने सृष्टि का विकास प्रकृति से मानते हुए ईश्वरेच्छापरतंत्र बनाकर अधिक ग्राह्य तथा बुद्धिगम्य बनाने का प्रयत्न किया है।

सन्दर्भ संकेत

1. सांख्य प्रवचन भाष्य 2/12.
2. सांख्य कारिका– 1
3. आचार्य विज्ञान भिक्षु – आ0वि0भि0